मानवता का शत्रु है - जातिवाद

"मनुर्भवः" यह वेद वाक्य है जिसका अर्थ है "मनुष्य बन" । मगर क्या हमने इस वेद सूत्र को समझा है ! यह बात तो सामान्यतः सभी को अच्छी लग सकती है कि इंसान की पहचान इंसान के रुप में होनी चाहिए न कि उसकी जाति के रुप में। हम भारतीय समाज की अजीब व्यवस्था पर नजर डालें तो पता चलता है कि यहां इसांन को इंसान कहने वाला कोई विरला ही होगा। यहां जाति के रुप में पहचान होती है। प्राचीन भारत तो केवल चार वर्गो में ही बंटा था जैसे ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र, परन्तु आज देखें तो भारतीय समाज छः हजार जातियों में बंटा है।

प्राचीन समय में समाज का बंटवारा कार्य के आधार पर हुआ था। आर्यों का सामाजिक विभाजन चार वर्णो में था जो आज तक आते - आते लगभग छः हजार पहचान चिंन्ह लिए हुए है। इसके पीछे अनेक कारण हो सकते हैं। भारत आक्रमणकारियों से त्रस्त देश रहा है। यहां अनेक विदेशी आक्रमणकारी जैसे हूण, यचप, कुषाण, शख, इस्लाम आदि आये। इनमें से कुछ अपने साथ अपनी धर्म व संस्कृति लेकर आये। इन्होनें अपनी धर्म व संस्कृति का प्रचार प्रसार भारत में किया तथा अपनी अलग पहचान बनायी। परन्तु कुछ आक्रमणकारी ऐसे थे जिनका अपना कोई धर्म व संस्कृति नहीं थी। वे यहां आकर घुल मिल गये, यहां का धर्म स्वीकार कर लिया व उसको नयी जातियों में बांटते चले गये। जाति का विभाजन पहले तो गुण, कर्म एवं स्वभाव के आधार पर था परन्तु वर्तमान में आते-आते यह जन्म पर आधारित हो गया। पहले यह इस प्रकार का था कि यदि कोई पठन-पाठन, विद्याध्ययन का कार्य करेगा तो ब्राह्मण कहलायेगा। समाज की रक्षा करने वाला क्षत्रिय, वाणिज्य व्यापार व कृषि करने वाला वैश्य, चर्म का कार्य करने वाला चर्मकार, कुम्भ (घड़ा) बनाने वाला कुम्भकार आदि कहलाता था। परन्तु कुछ काल के पश्चात यह इतना कठोर हो गया कि जातीय परिवर्तन असम्भव हो गया। वर्तमान में आप देखेंगे कि धर्म परिवर्तन करना सरल है। परन्तु जाति परिवर्तन असम्भव है। पेशा आप कोई भी चुन सकते हैं मगर जाति नहीं बदली जा सकती। कोई भी बच्चा जन्म लेते ही अपने माता पिता की जाति का कहलायेगा। कोई चर्मकार यदि विद्याध्ययन पूजापाठ का धंधा अपनाये तो कौन उसे ब्राहमण कहेगा। उसकी पहचान तो चर्मकार से ही होगी। ब्राहमण जाति में जन्म लेकर यदि कोई वाणिज्य व्यापार करे तो वह वैश्य नहीं बल्कि ब्राहमण ही कहलायेगा। इतनी भंयकर कठोरता भारतीय समाज में आज भी मौजूद है।

आज इतिहास के पन्ने उलट कर देंखें तो लगता है कि मध्यकाल में जाति प्रथा, भारतीय समाज को गुलाम बनाने में सहायक सिद्ध हुई है। मध्य युग में भारत पर विदेशी आक्रमण एक के बाद एक होते रहे। कभी मुहम्मद बिन कासिम तो कभी महमूद गजनवी, कभी मौहम्मद गौरी तो कभी तैमूर। उस समय भारतीय समाज जातीय वैमनस्य से जल रहा था। जातीय कट्टरता के कारण भारतीय एक जुट नहीं हो सके थे। देश की रक्षा का भार क्षत्रियों पर ही था। वे आक्रमण कारियों का सामना करने में असफल रहे तो उन्हें अन्य जातियों का सहयोग मिलना चाहिए था, परन्तु ऐसा नहीं हो सका। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब महमूद गजनवी सोमनाथ को लूट कर जा रहा था तो कुछ लोग जो हल जोत रहे थे उन्हे ऐसा लग रहा था जैसे कि देश में कुछ हुआ ही नहीं। देश में इतनी भंयकर घटना घटी और लोग हल जोतते रहे। देश गुलाम हो जाये और देशवासियों को ऐसा लगे कि कुछ हुआ ही नहीं इससे अधिक पागलपन और क्या हो सकता है ? समझने योग्य बात है कि यह पागलपन जातिवाद का था। इसका कारण केवल यह था कि अन्य जातियो को यह ज्ञान था कि देश की रक्षा करना हमारा कार्य नहीं। यह तो केवल क्षत्रियों का काम है हमारा कर्म तो हल जोतना, व्यापार करना,

---

तेजपाल सिंह, "परिचर"

विद्याध्ययन करना है। और मजे की बात तो यह है कि क्षत्रिय भी जातिय वैमनस्य के कारण संगठित नहीं हो सके थे। यदि भारतीय समाज इस जातिवाद के जहर से बचा होता तो आक्रमणकारियों का मुकाबला एक जुट होकर करता।

जहां देश की स्ततंत्रता का प्रश्न उठता है वहां विद्याध्ययन करना, पूजापाठ करना, व्यापार करना, हल जोतना बहुत गौण बात हो जाती है। मुख्य तो राष्ट्र की स्वतंत्रता है। इससे भयंकर जातीय दोष और क्या हो सकता है कि हम कई शताब्दियों तक आक्रमणकारियों के गुलाम बने रहे। जिसका मुख्य कारण तो जातिवाद ही था। जिस देश में जातीय वैमनस्य होता है वहां शत्रु का पंजा शीघ्र जम जाता है। शत्रु किसी भी जाति विशेष से मिल जाता है। बाद में सहायता देने वाली जातियों को भी पीड़ा पहुंचाता है। अंग्रेजो का उदाहरण हमारे सामने है। उन्होंने किस प्रकार हिन्दू - मुस्लिम दंगे कराकर भारत का राज्य हड़प लिया था।

प्रत्येक जाति की अपनी अलग परम्परा, मान्यता एवं रीति रिवाज होते हैं। कोई एक जाति अपने को श्रेष्ठ व दूसरों को निम्न समझने लगती है जिससे वैमनस्यता बढ़ती है और आये दिन लड़ाई झगड़े व युद्ध की स्थिति बनी रहती है। कुछ जातियां तो आपसी लड़ाई में अपना अस्तित्व ही खो बैठती हैं। खान्डा व सोमालिया में मानवता की हत्या क्या जातीयता के नाम पर नहीं हुई ? भारत में प्रतिदिन कहीं न कहीं जातिवादी दंगे होते ही रहते हैं जिससे जन धन दोनों की ही हानि होती है।

यदि किसी कार्य पर जाति विशेष का अधिकार हो जाये तो अन्य सब जातियां उससे वंचित रह जाती हैं और अधिकारी जाति का उस पर एकाधिकार हो जाता है। इसके बाद यदि वह जाति अपने कर्तव्य से विचलित हो जाये तो उस विशेष कार्य का पतन हो जाता है जैसे कि भारत का आध्यात्मिक पतन हुआ। यहां आध्यात्मिकता पर विशिष्ट जाति का अधिकार था, वह थोड़ा सा विचलित हुई तो आध्यात्मिकता का ही पतन हो गया क्योंकि अन्य जातियां उसके ज्ञान से वंचित थी। जाति का क्षेत्र सीमित होने से अनेक सामाजिक हानियां भी होती हैं जैसे सीमित क्षेत्र में योग्य वर को योग्य कन्या नहीं मिलती है या योग्य कन्या को योग्य वर नहीं मिल पाता। यदि एक जाति की लड़की या लड़का किसी दूसरी जाति के लड़के या लड़की से विवाह करने की इच्छा प्रकट करे तो जातिवाद आड़े आता है। जाति बन्धन से भयभीत होकर वे अयोग्य दाम्पत्य जीवन में बन्धन पर मजबूर हो जाते हैं। आजीवन उनके लिए कलह का वातावरण बन जाता है यह कितना अन्यायपूर्ण बंटवारा है कि एक किस्म की दो आत्मा जाति बन्धन के कारण एक नहीं हो सकती। यही नहीं, स्वजातीय विवाह की कठोरता दहेज प्रथा को भी जन्म देती है जिसका भयंकर परिणाम आज समाज में देखने को मिलता है। योग्यता के अनुकूल पेशा अपनाने में जातिवाद भयंकर बाधा उत्पन्न करता है जैसे एक अध्यात्मवेता का पुत्र एक महान शिल्पकार बन सकता है और एक शिल्पकार का पुत्र अध्यात्मवेता, परन्तु जातिवादी भावना के कारण वे अपने जातीय पेशे को छोड़ने में सामाजिक अपमान का विषय समझते हैं। इससे प्रतिभा का पूर्ण उपयोग नही हो पाता जो राष्ट्रीय विकास में बाधक है। जातिवाद में कुछ जातियों में उच्चता की भावना तथा कुछ में हीनता की भावना पनपती है जो दोनो के लिए घातक सिद्ध होती है। उच्चता की भावना वाला निम्न जाति वालों पर अत्याचार करता है व स्वयं भी हानि उठाता है। हीनता की भावना वाला शोषण का शिकार होगा तथा शीघ्र ही उसका पतन हो जायेगा या फिर समाज में वर्ग संघर्ष उत्पन्न हो जायेगा, जो मानवता के नाम पर एक कलंक है। वस्तुतः शत्रु है मानवता का यह जातिवाद। जिस प्रकार दीमक हरे भरे पेड़ को नष्ट कर देती है उसी प्रकार जातिवाद मानवता को नष्ट कर डालता है।

मनुष्य की पहचान मनुष्य के रुप में होनी चाहिये न कि किसी ज़ाति विशेष के रुप में। जलवायु व वातावरण के

प्रभाव के कारण मनुष्य रुप, रंग व आकार में भिन्न हो सकता है परन्तु उसके अन्दर सोचने की शक्ति, विचार, मान प्रतिष्ठा की भावना लगभग एक जैसी होती है। भारतीय यदि जातिवाद के जहर को दूर न कर पाये तो विश्व प्रगति में पीछे रह जायेंगे। जिस प्रकार क्षय रोग मानव शरीर को नष्ट करता है उसी प्रकार जातिवाद मानवता का भक्षण कर सकता है। आज समाज में विषमता पनपती जा रही है। यह सामाजिक विषमता उसी समय दूर हो सकती है जब हम जातिवाद को भुलाकर भाई चारे का व्यवहार करेंगे और मानवता के शत्रु - जातिवाद की दीवार को तोड़ सकेगें। मनुष्य का भावनात्मक पक्ष सबल होना चाहिए। राष्ट्रभक्ति ईश्वर भक्ति से बढ़कर है। मानवता, नैतिकता, आध्यात्मिकता आदि का पालन पूर्ण निष्ठा से करें तो इसमें दोनों ही भक्ति समाहित है। इसी से राष्ट्र का सामाजिक कल्याण हो सकता है।

* *

नारी - विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिकों की नजर में

1. नारी सम्मोहन और सहनशीलता की परपोत्री है।

   - जगदीश चन्द्र बोस

2. नारी संसार की प्रथम आवश्यकता है, गृहस्थ की दूसरी और मानवता का प्रतिफल है।

   - न्यूटन

3. नारी समय का सौन्दर्य है और सौन्दर्य की धूप।

   - फ्रैंकलिन

4. सबसे शानदार वस्तु है सत्य और सत्य का सुगन्धित पहलू है एक हंसमुख नारी और उसके नैसार्गिक गुण।

   - एडिसन

5. नारी विश्व का इंजन है। प्रेम, श्रद्धा और सहयोग के ईंधन के बिना यह इंजन सात कदम भी नहीं चल सकता।

   - मैडम क्यूरी

6. नारी परमात्मा की अलौकिक जादू की प्रतिमूर्ति है। नारी का जन्म शान्ति और प्रेरणा का अमर सन्देश है।

   - सी.वी. रमन

7. प्रकृति और परमात्मा के प्रेमपूर्ण अनुबन्ध का नाम है - नारी।

   - आगस्टाइन

8. पाप, भ्रष्टाचार और नृशसता का तिलस्मी नस्तर ही नारी कहलाता है।

   - जान ब्रेल

9. ईश्वर शान्ति है तो नारी उस महान शान्ति की मधुरतम सीमा रेखा।

   - भाभा होमी जहांगीर

10. प्रेमियों की आहें और दुष्टों की कराहों को पैदा करने वाली कोमल व सतरंगी चीज ही नारी कहलाती है।

    - फ्लेमिंग

* *